https://www.path-2-happiness.com/hi

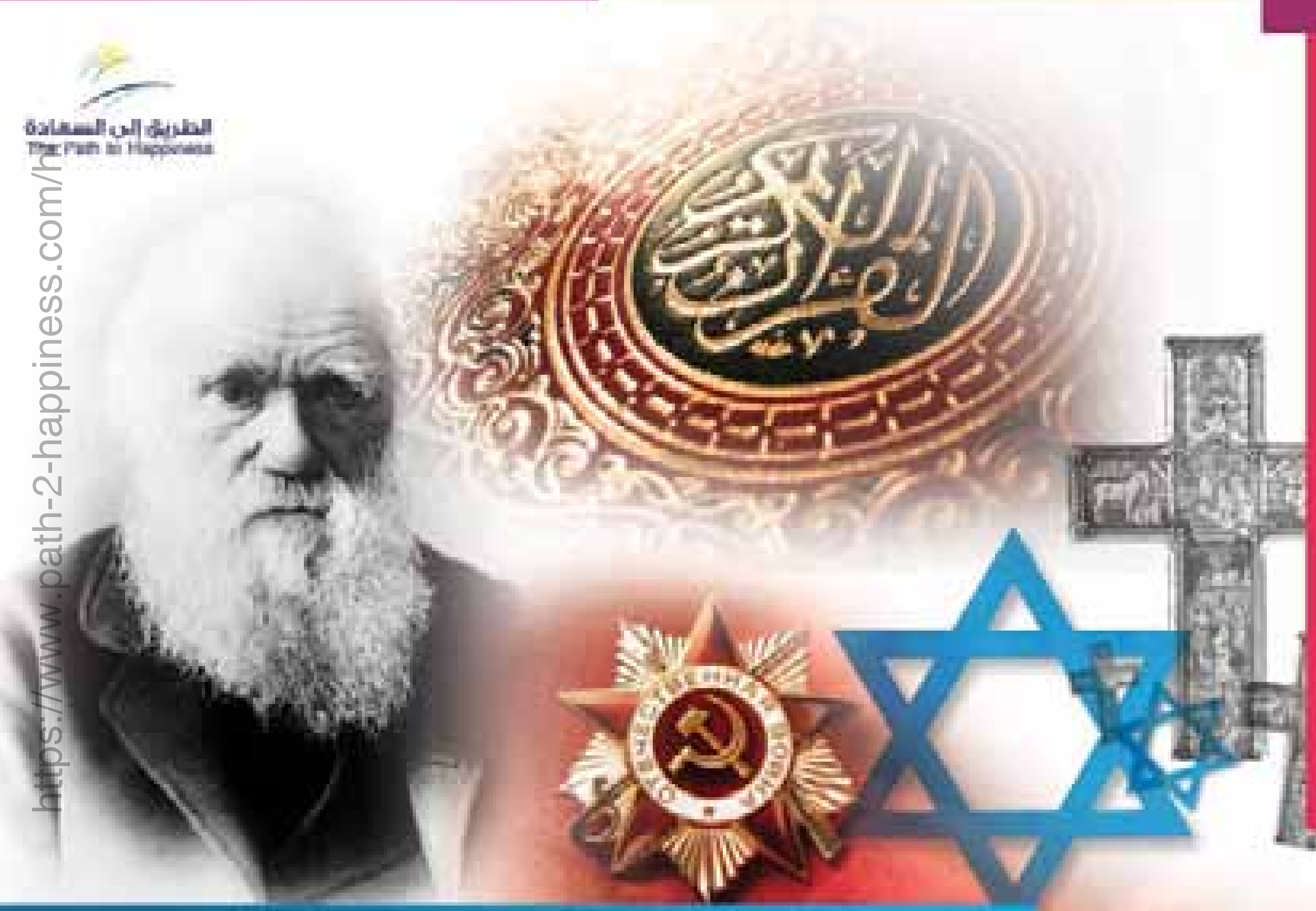

क्या मनुष्य को धर्म की आवश्यकता है?

अनुक्रमणिका

क्या मनुष्य को धर्म की आवश्यकता है?

क्या धर्म आवश्यक है?

बहु समाज के लिए धर्म की आवश्यकता।

सच्चे धर्म के नियम

हमें किस धर्म की आवश्यकता है?

https://www.path-2-happiness.com/hi

https://www.path-2-happiness.com/hi

क्या मनुष्य को धर्म की आवश्यकता है?

क्या धर्म आवश्यक है?

मनुष्य किसी भी स्थिति में धर्म के बिना जीवित नही रह सकता है।

जैसा कि मनुष्य एक सामाजिक है जो समाज से दूर रहकर अकेला जीवित नही रह सकता है, इसी प्रकार से वह अपने स्वभाव के अनुसार धार्मिक है, जो धर्म के बिना अच्छा जीवन बिता नही सकता है परन्तु धर्म मनुष्य के लिए स्वभाविक वृत्ति है।

इसका सबसे बडा सबूत यह है कि मुसीबत और कष्ट के समय मनुष्य ईश्वर की ओर शरण लेता है, ईश्वर ने कहा फिर जब ये कश्ती में सवार होते हैं तो खुदा को पुकारते (और) ख़ालिस उसी की इबादत करते हैं लेकिन जब वह उन वो निजात देकर खुश्की पर पहुंचा देता है, तो झट शिर्क करने लग जाते हैं। (अल अनक्बुत, 65)

सबसें ताकतवर परिणाम

विज्ञान के खोज के अनुसार सबसे तखतवर और स्वच्छ परिणाम ईमान है।

ऐन्सटीन

भौतिक वैज्ञानिक

जिस तरह से कि किसी पदार्थ का बनाने वाला उसके बारे में अधिक मालुमात रखता है, इसी प्रकार से प्रजापित ईश्वर अपनी प्रजा और उनकी आवश्यकताओं का ज्यादा ज्ञान रखता है। भला जिसने पैदा किया, वह बे-ख़बर है? वह तो छिपी बातों का जाननेवाला और (हर चीज़ से) आगाह है। (अल मुल्क, 14)

और इसलिए कि प्रजापति ईश्वर करुणावान और दाता है, उसने मानवता के लिए धार्मिक नियम लागू किये है ताकि वे सुखी रहें और उनका जीवन समायोजित हो ईश्वर ने कहा मोमिनों! खुदा और उसके रसूल का हुक्म कूबूल करो, जब कि खुदा के रसूल तुम्हें ऐसे काम के लिए बुलाते है, जो तुम को जिंदगी (हमेशा की) बख्शता है और जान रखो कि खुदा आदमी और उसके दिल के दर्मियान हायल हो जाता है और यह भी कि तुम सब उसके रु-ब-रु जमा किये जाओगे। (अल अन्फाल, 24)

और इसी कारण जो लोग वृत्ति का विरोध करते हैं और ईश्वर के वजूद के इंकार का दावा करते हैं वे स्वयं अपने झूठ और ग़लत को जानते है, ईश्वर ने कहा और बे-इंसाफ़ी और घमंड से उन से इंकार किया, लेकिन उन के दिल उन को मान चुके थे, सो देख लों कि फ़साद करने वालों का अंजाम कैसा हुआ।(अल न्म्ल, 14)

कष्ट और मुसीबत के समय वे इसका ज्यादा खुल कर अनुभव करते है, ईश्वर ने कहा। कहो, (काफिरे!) भला देखो तो अगर तुम पर खुदा का अज़ाब आ जाए या कियामत आ मौजूद हो, तो क्या तुम (ऐसी हालत में) खुदा के सिवा किसी और को पुकारोगे? अगर सच्चे हो (तो बताओ) (नहीं) बल्कि (मुसीबत के वक़्त तुम) उसी को पुकारते हो, तो जिस दुख के लिए उसे पुकारते हो, वह अगर चाहता है, तो उसको दूर कर देता है और जिनको तुम शरीक बनाते हो, (उस वक्त) उन्हें भूल जाते हो। (अल अनआम, 41- 42)

धार्मिक और रोगी

मुझे वह समय अच्छी तरह याद ज्ञान है जिसमें लोगों के अंतर्गत शिक्षा और धर्म के बीच आपसी प्रतिकर्षण के अलावा कोई बात-चीत ना होती थी। लेकिन यह झगडा अपरिवर्तनीय ढंग से निष्कर्ष रहा। जब कि विज्ञान मनोरोग की नई खोज धर्म के सिध्दातों का संकेत देती हैं। क्यों और कैसे इसलिए मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मज़बूत धर्म, नामाज़ और धर्म की स्थिर रुप से अनुकरण करना, चिंता, आशंका और तनाव को दूर करता है और जिन बीमरियों से हम पीडित हो रहे हैं असमे से आधे से ज्यादा बिमारियों के लिए मुक्ति है यहाँ तक कि डॉ ए.ए. प्रेल ने कहा कि धार्मिक (मनुष्य) व्यक्ति वास्तव में कभी भी मानसिक रोगों से पीडित नही होता है

डेल कार्नेज

अमेरिकी लेखक

https://www.path-2-happiness.com/hi

https://www.path-2-happiness.com/hi

डल कार्नेज
अमेरिकी लेखक

https://www.path-2-happiness.com/hi

शोधी बनो

दार्शनिक फ्रँसेस बेकोन ने शत-प्रतिशत सही कहा कि बहुत ही कम दर्शन मनुष्य को नास्तिकता के ओर ले जाता है। जब के दर्शन में गहराई तक पहुँचने से मनुष्य धर्म से निकट हो जाता है।

और ईश्वर ने कहा और जब इंसान को तक्लीफ़ पहुंचती है, तो अपने परवरदिगार को पुकारता है (और) उस की तरफ़ दिल से रुजूअ करता है। फिर जब वह उसको अपनी तरफ़ से कोई नेमत देता है, तो जिस काम के लिए पहले उस को पुकारता है, उसे भूल जाता है और खुदा का शरीक बनाने लगता है, ताकि (लोगों को) उस के रास्ते से गुमराह करे। कह दी कि (ऐ काफ़िरे नेमत) अपनी ना-शुक्री से थोडा-सा फायदा उठा ले, फिर तो तू दोज़खियों में होगा।(अल जुमृ, 8)

सारी मानवता ईश्वर की ओर से सृष्टि की हुई अपनी वृत्ति के अनुसार एक ऐसे ईश्वर की पूजा करने पर सहमत है, जिसके हाथ में लाभ और नष्ट हो, वह जो चाहे करता हो और जिसका चाहे निर्णय लेता हो, ईश्वर ने कहा और अगर खुदा तुम को कोई सख्ती पहुंचाए, तो इस के सिवा उस को कोई दूर करने वाला नही और अगर नेमत (व राहत) अता करे तो (कोई उसको वाला नहीं) वह हर चीज़ पर क़ादिर है।(अल अनआम, 17)

और ईश्वर ने कहा खुदा जो अपनी रहमत (का दरवाज़ा) खोल दे तो कोई उसको बन्द करने वाला नही और जो बंद कर दे तो उस के बाद कोई उस को खोलने वाला नहीं। (फतिर, 2)

मनुष्य में निहित दो शक्तियाँ है, ज्ञान की शक्ति और संकल्प की शक्ति, मनुष्य इन दोनों शक्तियों को प्राप्त करने में अपने प्रयत्न के अनुसार अपना लक्ष्य पा-लेता है और इसी प्रकार से मनुष्य की प्रसन्नता की भी यही स्थिति है। पहली शक्ति यानी ज्ञान की शक्ति है, मनुष्य के ईश्वर का, उसके नामों और उसके गुण का ज्ञान रखने, ईश्वर के आदेश और अनादेश के पालन करने, अच्छे चरित्र अपनाने, संतों के मार्ग पर चलने और स्वामियों के स्थान को पाने का तरीका, और इस मार्ग में चलने के लिए जिस ज्ञान की ज़रुरत है, यानी मानवता के मानसिक गहराइयों, बीमारियों, गंदगियों, और दुश्मनों पर ग़ालिब आने, अपने और अपने ईश्वर के बीच धर्मान्तरित विषय पर काबू पाने का ज्ञान (देवत्व नैतिकता में मानसिक बुलंदी और शुद्दता, जो मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ धैर्यवान बनाते है और हवस, संदेह और लौकिकता की बकवास से दूर करते है, ऊँचा लक्ष्य है) मनुष्य इस ज्ञान के प्राप्त करने में जिस प्रकार से प्रयत्न करेगा उसी के अनुसार उसका ईश्वर के पास स्थान और सम्मान होगा, बल्कि उसी के अनुसार जीवन में उसको प्रसन्नता प्राप्त होगी और भविष्य जीवन की बात ही और है।

बल्कि ज्ञान की यह शक्ति वास्तव में संकल्प की शक्ति का हत्यार है, जिससे ज्ञान की शक्ति में परिपक्व और स्थिरता उपलब्ध होती हैं।

मोमिनो! खुदा और उसके रसूल का हुक्म कुबूल करो जब कि खुदा के रसूल तुम्हें ऐसे काम के लिए बूलाते हैं, जो तुम को ज़िंदगी (हमेशा की) बख्शता है।(अल अन्फल, 24)

यही वह नास्तिकता के सिध्दांत हैं. जो आत्मा तो क्या शरीर को सुख देने से अपने दिवालिया का खुल्लम खुल्ला प्रकट करते हैं। और निश्चित रुप से चाहे ये लोग आपस मे मीठी मीठी बातें कर ले फिर भी मनुष्य को सच्ची प्रसन्नता देने से असहाय हैं।

बडी बडी मुसीबत और आपदाएँ के समय मनुष्य किसकी ओर शरण लेता है? निश्चित रुप से वह किसी बलिष्ठ छाया की तलाश करता है, वह ईश्वर की ओर शरण लेता है, जहाँ उसके लिए शक्ति, आशा, उम्मीद, सब्र, विश्वास और अपनी स्थिति को ईश्वर की ओर सौंपने की शक्ति मिलती है। ईश्वर ने कहा (यानी) जो लोग ईमान लाते और जिन के दिल खुदा की याद से आराम पाते हैं. (उन को) और सुन रखो-कि-खुदा की याद से दिल आराम पाते हैं।(अल राद, 28)

स्पष्ट सच्चाई

मेरा डॉ डिग्री के लिए शोध शिक्षा और मानव जाती कि उन्नती के आधार पर था, और मुझे ज्ञान हुआ कि इसलाम धर्म के बुनियादी स्थंभ मानव जाति की सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक पुनर्निर्माण करते है।

डॉ. डोग्लास
रिजीना मेयर

जब मनुष्य अन्याय की आग में जलता है, और उसका कडवापन महसूस करता है, तो वह यह विश्ववास रखता है कि इस ब्रह्माण्ड का एक ईश्वर है जो कुछ समय बाद ही सही पीडित की सहायता करता है, और यह कि भविष्य जीवन है जिसमें हर मनुष्य को अपने किये का पूरा-पूरा बदला मिलेगा, जिस दिन अच्छे को अच्छा बुरे को बुरा फल मिलेगा। इस

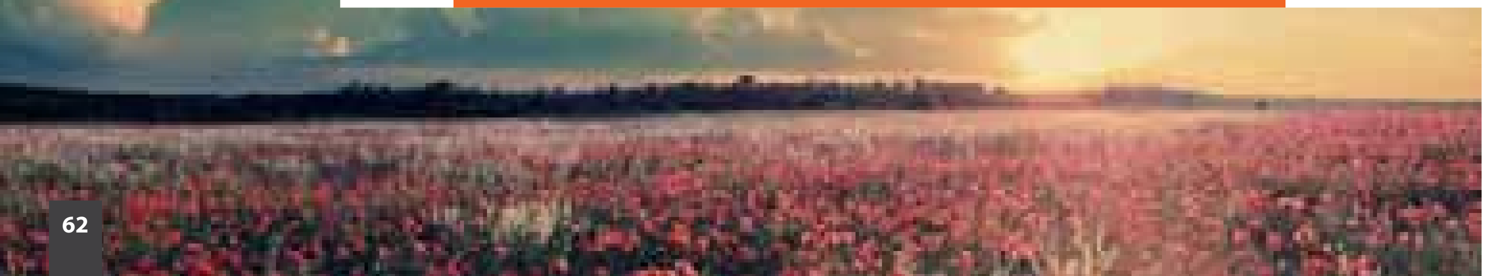

https://www.path-2-happiness.com/hi

अपने आप को समझो

मानसिक तनाव का सबसे बडा उपचार अल्लाह पर विश्वास रखना है।

विलियम जेम्स

अमेरिकी मनोवैज्ञानिक

धार्मिकता रोगों से मुक्ति देता है

मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मज़बूत धर्म और धर्म की स्थाई रुप से अनुकरण करना, चिंता, आशंका और तनाव को दूर करता है। और इन बीमरियों से मुक्तित प्राप्त कराता है।

डेल कार्नेज

अमेरिकन लेखक

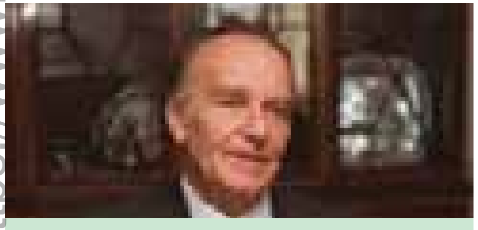

दोनों के बीच बडा अंतर

भौतिकता सदैव मनुष्य और पशु के बीच संयुक्ता की पुष्टी करती है। जब कि धर्म मनुष्य और पशु के बीच की अंतर को समझता है।

अलि इज्जत बेगोफिच

पूर्व बोसनिया राष्ट्रपति हर्जिगाविनिया

विश्वास से मनुष्य का मन ईश्वर पर अधिक विश्वास और निर्भरता से भर जाता है। ईश्वर ने कहा भला जो शख्य खुदा की खुश्नूदी का ताबेअ हो, वह उस शख्स की तरह खियानत कर सकता है, जो खुदा की ना-खुशी में गिरफ़तार हो और जिसका ठिखाना दोज़ख है और वह बुरा ठिकाना है।(आल इमरान, 162)

उपर युक्त बातों के विपरीत जो मनुष्य ईश्वर के ज्ञान और उस पर विश्वास खो दिया हो, अवश्य रुप से वह हर प्रकार की शक्ति, सुख राहत और प्रसन्नता खो बैठा है, वह दुख और नष्ट के लपेट में जीवित है, उसको मानसिक सुख या शारीरिक आनंद नही है, उसका लक्ष्य हवस को पूरा करना और धन इकट्ठा करना है, वह न अपने वजूद का कोई लक्ष्य जानता है और न अपने जीवन का कोई कारण, बल्कि वह प्रसन्नता की खोज और हवस के पीछे अपना जीवन दुखों में बिताता है, यहाँ तक कि वह पशु-पक्षी, बल्कि उससे भी नीच हो जाता है, ईश्वर ने कहा या तुम यह ख्याल करते हो कि इन में अक्सर सुनते या समझते हैं? (नहीं ये तो चौपायों की तरह के हैं बल्कि उन से भी ज्यादा गुमराह हैं (अल फुरखान, 44)

एक बडे कष्ट ने इस मनुष्य पर आक्रमण किया है, जिसका शिकार बनकर यह आंतरिक दुख और मानसिक कलेश से पीडित हो गया है और जो मेरी नसीहत से मुंह फेरेगा, जिसकी ज़िंदगी तंग हो जाएगी और कियामत को हम उसे अंधा कर के उठाएंगे। (ताहा,124)

कितना ही बडा अंतर है उस मनुष्य के बीच जो अपने ईश्वर को जाने, उसकी महानता का ज्ञान प्राप्त करे, उसके आदेशों का पालन करें, उसकी ईच्छाओं के प्रकार उपयोग करे, ईश्वर के नियमों को अपनाये. जिस काम के न करने का आदेश है उसका पालन करे, और जिस काम के न करने का आदेश है उससे दूर रहे, मनुष्य यह ज्ञान रखता हो कि हर छोटी बडी और हर समय हर लमह उसको अपने ईश्वर की आवश्यकता है। ईश्वर ने कहा

लोगों! तुम (सब) खुदा के मुहताज हो और खुदा बे-परवा, हम्द (व सना) के लायक़ है।(फातिर,15)

अच्छे सलाह देनेवाले डाक्टर

मनोचिकित्सक भी एक नई शैली में प्रचारक ही है, क्यों कि यह लोग मरणोपरांत में नरक के दण्ड से सुरक्षित रहने के लिए धर्म को मज़बुती से अनुकरण करने कि सलाह नही देते. लेकिन इस दुनियावी जीवन में रखे हुए नर्क से बचने के लिए धर्म पर चलने की सलाह देते हैं। और वह नर्क मेदे की बीमारी, पागल पन नसों का तनाव है।

हेनड्री फोर्ड

अमेरिकी फोर्ड कंपनी का संस्थापक

https://www.path-2-happiness.com/hi

और उस मनुष्य के बीच जिसको संदेह और कल्पनाओं ने अप्रसन्नता और कष्टों के अंधेरे मे ढकेल दिया है, वह अंधे की तरह इधर-उधर भटकता रहेगा, उसका मन शक और भ्रम से भर जायेगा, और जब भी प्रसन्नता की खोज की कोशिश करेगा, तो एक के बाद दूसरा मृगतृष्णा ही उसके भाग्य मे होगा, अगर ये वह दुनिया की लज़्ज़तें प्राप्त कर ले, चाहे वह संसार के ऊँचे ऊँचे स्थान पर ही क्यों न आसन हो जाये। क्योंकि जो ईश्वर को खो दे वह क्या प्राप्त करेगा? और जो ईश्वर को प्राप्त कर ले वह क्या खोयेगा ?

धर्म ही जीवन है

मनुष्य के लिए धर्म एक प्राकृतिक आवश्यक मानव वैधता है। और हमारे लिए ये बताना पर्याप्त होगा कि मानव को धर्म की आवश्यकता आध्यात्मिक निराशा कि ओर ले जाता है। जिसके कारण मनुष्य ऐसी जगह धार्मिक सुकून प्राप्त करने का प्रयास करता है। जहाँ से उसे कुछ भी प्राप्त नही होता।

आरनाल्ड ट्वेन बी

ब्रिटिश इतिहासकार

चिंता का युग

हम चिंता के युग में जीवन यापन कर रहे हैं। और इस बात में कोई शंका नही कि सैन्सी और टेकनाँलजी के उपलब्दीयाँ मनुष्य के लिए कल्याण और आराम में अधिकता का कारण है। लेकिन बदले में मनुष्य के लिए प्रसन्नता, ख़ुशी और संतोष में वृध्दि का कारण नही है। बल्कि इसके अन्यथा मनुष्य के लिए चिंता, निराशा और मानसिक रोगों में वृध्दि हो रही है। जिसके कारण मनुष्य इस जीवन की सुंदर अर्थ खो बैठा।

रेनिह डोलो

नोबल पुरस्कृत लेखक

बहु समाज के लिए धर्म की आवश्यकता।

जब मनुष्य के लिए धर्म एक आवश्यकता है, तो बहु समाज के लिए धर्म की आवश्यकता अधिक हो जायेगी, क्योंकि धर्म समाज के लिए रक्षक है, इसलिए कि मानव जीवन आपस में उसके सदस्यों के बीच भले कार्यों में सहयोग के बिना पूरा नही हो सकता है।

और (देखो) नेकी और परहेज़गारी के कामों में एक दूसरे की मदद किया करों और गुनाह और ज़ुल्म की बातों में मदद न किया करो। (अल माइदा, 2)

और आपसी यह मदद केवल उसी प्रणाली संभव है जो संबंधों को नियन्त्रित करे, कर्तव्यों को परिभाषित करे और अधिकारों को सुनिश्चत रखे।

और इस प्रकार के प्रणाली का किसी ऐसे विशेषज्ञ की ओर से होना ज़रुरी है जो मानवता की आवश्यकताओं का ज्ञान रखता हो

भला जिस ने पैदा किया, वह बे-ख़बर है? वह तो छिपी बातों का जानने वाला और (हर चीज़ से) आगाह है। (अल मुल्क, 14)

जैसे जैसे मानवता, धर्म, धार्मिक नियम और उसके वुसूलों से दूर होते गए, उसी प्रकार से वह शक, गुमराही, अप्रसन्नता, भ्रम और नष्ट में डूबते गए।

और पृथ्वी के चारों ओर कोई शक्ति नही है जो

वो सुबूत जो स्वयं बताये

इसबात की संभावना है कि हर वह अंश जिस से हम प्रेम करते हैं, वह नष्ट हो जाय, और यह भी संभावना कि बुध्दि, विज्ञान, और उद्योग के उपयोग की स्वतंत्रता समाप्त हो जाय। लेकिन यह असंभव है कि धार्मिकता मिठ जाय बल्कि यह ऐसे भैतिकवाद के गलत होने पर स्वयं सुबूत है जो मानव को स्थलीय जीवन के अमूल्य मार्ग के अंतर्गत बाँध रखे

अनैष्ट रेनान

फ्रेंच ऐतिहासकार

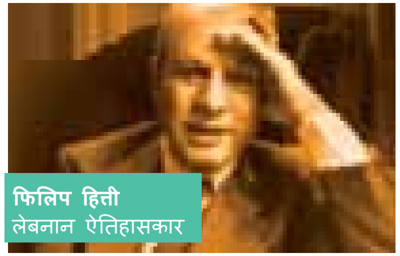

फिलिप हित्ती

लेबनान ऐतिहासकार

सच्ची शरियत

इसलामी शरियत धार्मिक और संसारिक के बीच कोई अंतर नही रखती। बल्कि वह तो अल्लाह के साथ मनुष्यके रिश्ते को, और अल्लाह के ओर मनुष्य के कर्तव्य को बताती है, और इन रिश्तों को व्यवस्थित करती है, जैसा कि इसलामी शरियत मनुष्यों का दूसरे मनुष्यं से रिश्ता जोडती है। अल्लाह के सारे आदेश और रोक जो धार्मिक, सामाजिक और इसके अलावा जिस किसी भी चीज़ से संबंधित हो वह सबके सब क़ुरआन में मौजूद हैं। जिस मे से लग भग 6000 या इससे कुछ अधिक आयतें हैं। जिसमे से लगभग 1000 आयतें विधान से संबंधित हैं।

https://www.path-2-happiness.com/hi

https://www.path-2-happiness.com/hi

धर्म में व्यक्तिगत इच्छा का कोई स्थान नही

मदीना मुनव्वरा में मोहम्मद सल्ललाहु अलैही व सल्लम का जो गरमं जोशी से स्वगत किया गया, इसके कारणों में से एक कारण हमारे मत यह है कि मदीना मुनव्वरा के ज्ञानीवानों के लिए इसलाम में प्रवेश होना अपने समाज कि अराजकता का उपचार था। क्यों कि, इन ज्ञानी लोगों ने ये देखा कि इसलाम ने एक मज़बूत संगठन, और मनुष्य के बोलगाम इच्छाओं को ऐसें दृढ शासनों के आगे नत मस्तक करदिया, जो कि एसे प्रमुख शक्तित वाली शरियत के ओर से लागु किये गये है जो व्यक्तिक इच्छाओं पर अतिक्रमण है।

थामस अरनाल्ड

ब्रिटिश प्राच्य विद्या विशारद

आप लोगों की बुध्दि कहाँ चले गयी

आप लोग अल्लाह की उपस्थिती में शंका क्यों करते हो। अन्यथा अल्लाह ना होता तो मेरी बीवी मेरे साथ विश्वासघात करती। और मेरा सेवक मुझे चुरालेजाता।

फोल्टेर

फ्रेंच दार्शनिक

प्रणाली के सम्मान को सुनिश्चित रखने, सामुदायिक सामंजस्य और उसके नियमों की स्थिरता बाकी रखने और सामाजिक सुख और आराम के कारण प्रावधान करने मे धार्मिकता की शक्ति के समान हो। और इसका रहस्य यह है कि मनुष्य सारे प्राणियों में अपने गतिविधियाँ और कार्यों मे वैकल्पिक है, जिसका कंट्रोल ऐसी उध्दश्य शक्ति करती है जिसको न कान सुन सकते है और न आँख देख सकते है, वह शक्ति विश्वास (ईमान) है, जो आत्मा को साफ करती है, शारीरिक अंगों को नियमित बनाती है और मनुष्य को अपने बाह्य के समान अपने आंतरिक के भी ध्यान रखने पर मजबूर करती है और अगर तुम पुकार कर बात कहो तो वह तो छिपे भेद और बहुत छिपी बात तक को जानता है। (ताहा, 7)

परन्तु मनुष्य सदा सही सिध्दांत या ग़लत सिध्दांत से जुडा होता है, जब उसका सिध्दांत सही हो, तो उसकी हर चीज़ सही हो जाती है, और जब सिध्दांत ही ग़लत हो तो हर चीज़ उसकी ग़लत हो जाती है।

इसी कारण न्याय और इंसाफ के नियमों के अनुसार लोगों के बीच व्यवहार को फैलाने मे धर्म ही सब से अधिक सुनिश्चित है, और इसी कारण धर्म एक सामाजिक आवश्यकता है। परन्तु अगर धर्म बहु समाज के अंदर मानसिक शरीर में दिल के समान हो जाये तो कोई हैरत की बात नही।

और जब साधारण रुप से धर्म का यह स्थान है, और आज कल हमारे इस संसार मे कई धर्म और जात हैं, इसी प्रकार से हम यह देखते हैं कि हर जात को अपने धर्म से प्रेम है और वह उससे खुश भी हैं। तो वह कौन-सा सही धर्म है जो मानवता के लिए सही चीज़ों का उपदेश देता है? और सही धर्म के नियम क्या हैं?

सच्चे धर्म के नियम

सदैव हर धार्मिक अपने धर्म ही को सब से ज्यादा सही होने, और दूसरे धर्मा के ग़लत होने का दृढ़ विश्वास रखता है। और हर धार्मिक अपने धर्म की सफाई करने मे दूसरों से अलग होता है। परन्तु विकृत या भ्रष्ट धर्मवाले यह दावा करते है कि उन्होने अपने वंशजो को इसी के अनुसार पाया है और वे उन्ही का अनुसरण कर रहे है। और इसी तरह हम ने तुम से पहले किसी बस्ती में कोई हिदायत करने वाला नहीं भेजा, मगर वहाँ के ख़ुशहाल लोगों ने कहा कि हम ने अपने बाप-दादा को एक राह पर पाया है और हम क़दम-ब-क़दम उन ही के पीछे चलते है। पैग़म्बर ने कहा, अगरचे मै तुम्हारे पास ऐसा (दीन) लाऊं कि जिस (रास्ते) पर तुम ने अपने बाप-दादा को पाया, वह उससे कही सीधा रास्ता दिखता हो, कहने लगे कि जो (दीन) तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस को नही मानते। (अल ज़ुख़्रूफ 23- 24)

और ईश्वर ने कहा और जब उन लोगों से कहा जाता है कि जो (किताब) खुदा ने नाज़िल फरमायी है, उसकी पैरवी करेंगे जिस पर हमने बाप-दादा को पाया। भला अगरचे उनके बाप-दादा न कुछ समझते हो और न सीधे रास्ते पर हों (तब भी वे उन्ही की पैरवी-किए जाएंगे) जो लोग कफ़िर हैं. उनकी मिसाल उस शख्स की है जो किसी किसी ऐसी चीज़ को आवाज़ दे जो पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ सुन न सके। (ये) बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे है कि (कुछ) समझ ही नही सकते।(अल ब्क़्रा, 170- 171)

और यह लोग अपनी स्थिति को बिना सोंच विचार या बुध्दिमत्ता के केवल अंधी परंपरा पर आधारित होते हैं, या ग़लत, झूठी और विरोधाभासी बातों पर आधारित होते है जिनके सच्चे होने का न कोई समर्थन होता है और न कोई सबूत। निश्चित रुप से धर्म और सिध्दांत के बारे में इस जैसी बातों पर आधारित होना और इनको सबूत बनाना सही नही होता है।

https://www.path-2-happiness.com/hi

और इसलिए कि सही बात एक से अधिक नही हो सकती, परन्तु यह असंभव है कि यह सब धर्म सही हो, और यह भी असंभव है कि यह सब धर्म एक ही समय में सच्चे हो, वरना सच विरोधभासी हो जायेगा, और इस प्रकार के विचार को श्रेष्ठ बुध्दि स्वीकार नही करती है। अगर यह खुदा के सिवा किसी और का (कलाम) होता, तो उसमें (बहुत-सा) इख्तिलाफ़ पाते। (अल निसा, 82)

तो फिर सच्चा धर्म क्या है? और वह कौन से नियम है जिसके अनुसार हम इन सिध्दंतों में से किसी एक के सच होने का (जिसमें यह नियम उपलब्ध हो) और इसके अलावा दूसरे सिध्दांतों के ग़लत होने का निर्णय लें?

वह नियम यह हैं

प्रथमः यह कि उस धर्म का स्त्रोत देवत्व हो, यानी ईश्वर की ओर से हो, इस प्रकार से कि इस धर्म को ईश्वर ने भक्तों तक पहुँचाने के लिए अपने किसी एंजिल्स के व्दारा रसूलों पर सराय हो। इसलिए कि सच्चा धर्म वह इस ब्रह्माण्ड के प्रजापति ईश्वर का धर्म है, और ईश्वर ही वह पवित्र महात्मा है जो सारे जीव से अपनी ओर से भेजे हुए धर्म के बारे में भविष्य जीवन में प्रश्न करेगा, ईश्वर ने कहा (ऐ मुहम्मद!) हम ने तुम्हारी तरफ़ उसी तरह वह्य भेजी है, जिस तरह नूह और उन से पिछले पैग़म्बरों की तरफ़ भेजी थी और इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और याक़ूब की औलाद और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारुन और सुलेमान की तरफ़ भी हम ने वह्य भेजी थी और दाऊद को हम ने ज़बूर भी इनायत की थी। और बहुत से पैग़म्बर हैं, जिनके हालत हम तुम से पहले बयान कर चुके है, और बहुत से पैग़म्बर हैं जिनके हालत तुमसे बयान नही किये। और मूसा से तो खुदा ने बातें भी की। (सब) पैग़म्बरों को (खुदाने) खुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले (बना कर भेजा था), ताकि पैग़म्बरों के आने के बाद लोगों को खुदा पर इल्ज़ाम का मौक़ा न रहे और खुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (अल निसा, 163 - 165)

इस फल स्वरुप से जो भी धर्म कोई व्यक्ति लाये और उसको अपने ही ओर श्रेय करे, न कि ईश्वर की ओर, तो निश्चित रुप से वह धर्म ग़लत होगा, और जो धर्म भी मानव सृजन करे, उसको बढावा दे, और उसको

https://www.path-2-happiness.com/hi

अच्छा समझे, ज़रुर वह धर्म भी गलत होगा, क्यों कि मानवता की भलाई बुध्दिमान प्रजापति ईश्वर से अधिक वह व्यक्ति जान नही सकता जो केवल धार्मिकता में परिवर्तन लाये या विकास करे।

भला जिस ने पैदा किया, वह बे-खबर है? वह तो छिपी बातों का जानने वाला और (हर चीज़ से) आगाह है। (अल मुल्क, 14)

वरना तो विकास लानेवाला या परिवर्तन करने वाला ही वह प्रभु और ईश्वर होगा जो मानवता की भलाई का अधिक ज्ञान रखता है (ईश्वर इन बातों से बहुत ही परेह है) क्या ये (काफ़िर) खुदा के दीन के सिवा किसी और दीन के तालिब हैं, हालाकि सब आसमानों और ज़मीन वाले, खुशी या ज़बरदस्ती से खुदा के फ़रमाबरदार हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले है। (आल इम्रान, 83)

ईश्वर ने कहा

तुम्हारे फरवरदिगार की क़सम! ये लोग जब तक अपने झगड़ों में तुम्हे मुनसिफ़ न बनायें और जो फ़ैसला तुम कर दो उस से अपने दिल में तंग न हों। (अल निसा, 65)

व्दितीयः धर्म एक ईश्वर की प्रार्थना करने का आदेश दे, और किसी को उसका बागीदार मानने को पाप समझे। एक ईश्वर को मानना सारे नबी और रसूलों के धर्म का आधार है, ईश्वर का भागीदार समझना और मूर्ति पूजा करना श्रेष्ठ बुध्दि और सामान्य वृति के विरोध है। ईश्वर ने कहा और जो पैग़म्बर हमने तुम से पहले भेजे, उन की तरफ़ यही वह्य भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नही, तो मेरी ही इबादत करो। (अल अंबिया, 25)

एकता (एक ईश्वर को मानना)

इसलाम में बुनियादी सत्य एकता है। अल्लाह एक है और मुहम्मद (स) अल्लाह के रसूल है। शिर्क को एक ओर रखदिया गया है। इस कारण (अल्लाह को) ना बाप है न बेटा और न पवित्र व संसारिक में अंतर है। न पूर्वी और पश्चिमी के दर्मियान भेद है। यहाँ तो केवल एक दुनिया और एक दीन है।

मिखाईल हेम्झ

ब्रिटिश लेखक

https://www.path-2-happiness.com/hi

हर नबी ने अपनी क़ौम से यही कहा खुदा की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। मुझे तुम्हारे बारे में बड़े दिन के अज़ाब का (बहुत ही) डर है। (अल आरफ, 59)

इस आधार से जो भी धर्म ईश्वर के साथ किसी और की भागीदारी को स्वीकार करें या नबी या एंजिल या साधू, सन्त या मानव या पत्थर वग़ैरह को ईश्वर का भागीदार माने वह धर्म ग़लत है, क्यों कि प्रार्थना सिर्फ उस एक ईश्वर के लिए है जिसका कोई भागीदार नही, मूर्ति पूजा और ईश्वर का भागीदार मानना खुली त्रुटि है। और हर वह धर्म (चाहे वह ईश्वर की ओर से क्यों न आया हो) जिसमें ईश्वर की भागीदारी का सिध्दांत हो, वह धर्म ग़लत है। और ईश्वर ने हमारे लिए उसका उदाहरण देते हुए यह कहा। लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, उसे ग़ौर से सुनो कि जिन लोगों को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो, वे एक मक्खी भी नहीं बना सकते, अगरचे उसके लिए सब जमा हो जाए और अगर उन से मक्खी कोई चीज़ छीन ली जाए तो उसे उस से छुडा नहीं सकते। तालिब और मत्लूब (यानी आबिद और माबूद दोनों) गये-गुज़रे हैं। इन लोगों ने खुदा की क़द्र जैसी करनी चाहिए थी, नही की, कुछ शक नहीं कि खुदा ज़बरदस्त (और) ग़ालिब है। (अल हज, 73 - 74)

तृतीयः यह है कि धर्म सामान्य वृत्ति के मुनासिब हो। ईश्वर ने कहा तो तुम एक तरफ़ के हो कर दीन (खुदा के रास्ते) पर सीधा मुंह किए चले जाओ (और) खुदा की फ़ितरत को, जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है, (अख्तियार किए रहो) खुदा की बनायी हुई (फ़ितरत) में तब्दीली नहीं हो सकती। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नही जानते। (अल रोम, 30)

वृत्ति वह चीज़ है जिस पर प्रजापति ने अपनी प्रजा की सृष्टि की है, और यह वृत्ति प्रजा की स्थापना का एक अंग हो गया है, इसी कारण यह असंभव है कि धर्म मानवता के लिए उपयुक्त न हो, वरना प्रजापति धर्म के नियम बनानेवाला न होता, यह बात असंभव और ईश्वर के साथ भागीदार मानने के समान है।

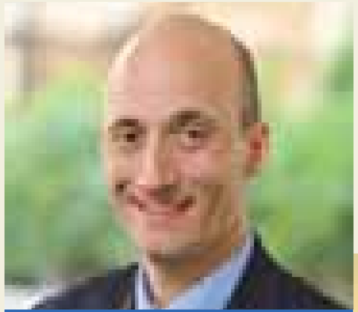

अल्लाह की प्रकृति

छोटे बच्चों में स्थाई रुप से एक अल्लाह पर ईमान रखने की वैधता पाई जाती है। इसलिए कि बच्चों का यह विचार होता है कि विश्व में सारी चीज़े किसी कारण ही पैदा की गयी हैं। बल्कि जब हम बच्चों को तनहा किसी व्दीप में छोड दें, और वे वहीं शिक्षा प्राप्त करें तो ज़रूर वो अल्लाह पर ईमान ले आयेंगे।

गास्टोन बारेट

ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटी का मानवीय सैध्दांतिक

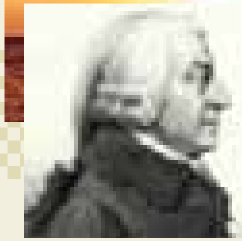

अंधविश्वास का रोग

अंधविश्वास जैसे ज़हर का इलाज शिक्षा ही है।

आदम स्मित

स्काटलैंड का दार्शनिक

चौथाः यह है कि धर्म श्रेष्ट बुध्दि के मुनासिब हो, इसलिए कि सच्चा धर्म ईश्वर का बनाया हुआ नियम है, श्रेष्ठ बुध्दि ईश्वर की बनायी हुयी जीव है, यह असंभव है कि ईश्वर के नियम और उसके जीव के बीच टकराऊ हो। ईश्वर ने कहा क्या उन लोगों ने मुल्क में सैर नहीं की, ताकि उनके दिल ऐसे होते कि उन से समझ सकते और कान (ऐसे) होते कि उन से सुन सकते। बात यह है कि आंख अंधी होती, बल्कि दिल जो सीनों में हैं (वे) अंधे होते हैं।(अल हज, 46)

ईश्वर ने कहा बेशक आसमानों और ज़मीन में ईमान वालों के लिए (खुदा की खुदरत की) निशानियां हैं। और तुम्हारी पैदाइश में भी और जानवरों में भी, जिन को वह फैलाता है, यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां हैं। और रात और दिन के आगे-पीछे आने-जाने में और वा जो खुदा ने आसमान से रोज़ी (का ज़रिया) नाज़िल फ़रमाया, फिर इस से ज़मीन को उस के मर जाने के बाद ज़िंदा किया, उस में और हवाओं के बदलने में अक़ल वालों के लिए निशानियां हैं। ये खुदा की आयतें हैं, जो हम तुम को सच्चाई के साथ पढ़ कर सुनाते है, तो यह खुदा और उसकी आयतों के बाद किस बात पर ईमान लाएंगे? (अल जासिया, 6)

परन्तु यह ग़लत है कि सच्चा धर्म मिथकों, मनोरंजक कहानियाँ या विरोधाबास हो। इस प्रकार से कि हम इस जैसे धर्म कि कुछ बातों और सी धर्म की दूसरी बातों के बीच टकराऊ पाते है, जो श्रेष्ठ बुध्दि के विरोध है, क्योंकि श्रेष्ठ बुध्दि कोई आदेश दे फिर उसी आदेश के विरोध में दूसरा आदेश दे, और इसी प्रकार से एक समूह के लिए किसी काम को अधिकृत करे, और वही काम दूसरे समूह के लिए वंचित करे, या एक ही प्रकार की बातों के बीच अंतर करे, या विरोधभासी बातों को एक साथ ज़ोडते।

https://www.path-2-happiness.com/hi

अपना प्रमाण प्रस्तुत करो

बुध्दिमान वह है जो प्रमाण पर अपनी ईमान की नीव रखता हैं।

डेविड हयोम
स्काटलैंड का दार्शनिक

मनुष्य की पहचान उसके चरित्र है

नैतिकता के बिना मनुष्य एक क्रूर है जिसे इस संसार में खुला छोडदिया गया है।

अल्बेर कामो
फ्रेंच दार्शनिक

ईश्वर ने कहा भला ये क़ुरआन में ग़ौर क्यों नहीं करते? अगर यह खुदा के सिव किसी और का (कलाम) होता, तो उसमें (बहुत-सा) इख़्तिलाफ़ पाते।(अल निसा, 82)

बल्कि धर्म का स्पष्ट सबूतों पर आधारित होना ज़रुरी है। ईश्वर ने कहा

(ऐ पौग्म्बर) कह दो कि अगर सच्चे हो तो दलील पेश करो (अल बखरः, 111)

पँचवा : यह है कि धर्म अच्छे चरित्र और अच्छे कार्य का संदेश दे। ईश्वर ने कहा कहो कि (लोगो!) आओ मैं तुम्हें वे चीज़े पढ़ कर सुनाऊ जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर हराम कर दी हं. (उन के बारे में उस ने इस तरह इर्शाद फ़रमाया है) कि किसी चीज़ को खुदा का शरीक न बनाना और मां-बाप से (बद-सुलूकी न करना, बल्कि) सुलूक करते रहना और नादारी (के ख़तरे) से अपनी औलाद को क़त्ल न करना, क्योंकि तुम को और उन को हमी रोज़ी देते है और बे-हयाई के काम ज़ाहिर हो या छिपे हुए, उन के पास न फटकना। और किसी जान (वाले) को जिस के क़त्ल को खुदा ने हराम कर दिया है, क़त्ल न करना, मगर जायज़ तौर पर (यानी) जिस का शरीअत हुक्म दे। इन बातों

की वह तुम्हें ताकीद फ़रमाता है, ताकि तुम समझो। और यतीम के माल के पास भी न जाना, मगर ऐसे तरीक़े से कि बहुत पसंदीदा हो, यहाँ तक कि वह जवानी को पहुंच जाए और नाप और तौल इंसाफ़ के साथ पूरी-पूरी किया करो। हम किसी को तक्लीफ़ नहीं देते, मगर उस की ताक़त के मुताबिक और जब (किसी के बारे में) कोई बात कहो, तो इंसाफ से कहो, वह (तुम्हारा) रिश्तेदार ही हो और खुदा के अह्द को पूरा करो। इन बातों का खुदा तुम्हें हुक्म देता है, ताकि तुम नसीहत करो। और यह कि मेरा सीधा रास्ता यही है, तो तुम उसी पर चलना और रास्तों पर न चलना कि (उन पर चल कर) खुदा के रास्ते से अलग हो जाओगे। इन बातों का खुदा तुम्हें हुक्म देता है, ताकि तुम परहेज़गार बनो। (अल अनआम, 151- 153)

ईश्वर ने कहा खुदा तुम को इंसाफ और एहसान करने और रिश्तेदारों को (खर्च से मदद) देने का हुक्म देता है और बे-हयाई और ना-माक़ूल कामों से और सर-कशी से मना करता है (और) तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम याद रखो।(अल न्हल, 90)

निश्चिच रुप से यह बात ग़लत है कि कोई धर्म झूठ या हत्या या अन्याय या

https://www.path-2-happiness.com

https://www.path-2-happiness.com/hi

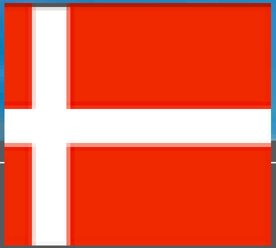

वास्तविक बनो

जीवन में यथार्थवादी दृष्टिकोण रखना, सच्ची सलाह देना अच्छे व्यवहार और दया की ओर जनता को बुलाना, और अच्छे और गहरे मानवतावाद का प्रचार करना। यह चीज़े और इसके अतिरिक्त बहुतसी वह चीज़े हैं जो मेरी दृष्टि में इसलाम धरम के सच्चे होने का सबसे बडा प्रमाण है।

थोल

डेन मार्क प्राच्य विद्या विशारद

चरित्र सुकून है

मेरी जानकारी के अनुसार नैतिक अधिनियम वह है जिसके संपन्न ह□□ने के बाद आंतरिक सुकून प्राप्त हो। और अनैतिक अधिनियम वह है जिसके संपन्न होने के बाद आंतरिक बेचैनी प्राप्त हो।

एरनिस्थ मंगवाई

अमेरिकन लेखक

बलात्कार या माता-पिता के प्रति दुव्यवहार करने या इस जैसी दूसरी बातों का संदेश दे।

छठवाः यह है कि धर्म मनुष्य का ईश्वर के साथ, और मनुष्य का अपने दूसरे भाइयों के साथ संबंध विनियमन करे। ईश्वर ने कहा जिन चीज़ों को तुम खुदा के सिवा पूजते हो, वे सिर्फ नाम हैं, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। खुदा ने उन की कोई सनद नाज़िल नहीं की। (सुन रखो कि) खुदा के सिवा किसी की हुकूमत नहीं है। उस ने इर्शाद फ़रमाया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।(युसुफ, 40)

परन्तु धर्म का प्रजापति की ओर मनुष्य के कर्तव्य, और इसी प्रकार से मनुष्य के आपसी संबंधों को विनियमन करना आवश्यक है। ईश्वर ने कहा और खुदा ही की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाओ और माँ-बाप क़राबत वालों और यतीमों और मुँहताज़ों और (रश्तेदार पड़ोसियों और अजनबी पड़ोसियों और पहलू के साथियों (यानी पास बैठने वालों) और मुसाफ़िरों और जो लोग तुम्हारे क़ब्जे में हों सब के साथ एहसान करो। (अल निसा, 36)

सातवाः यह है कि वह धर्म मनुष्य को सम्मान दे, और अपने भक्तों के बीच जाति या रंग या जन जाति के कारण अंतर न करे। परन्तु मानवता में श्रेष्ठवान होने का महत्वपूर्ण मानक मनुष्य के अपने कार्य और उसके अंतर्गत ईश्वर के प्रति भय होना है। ईश्वर ने कहा और हम ने बनी आदम को इज्ज़त बख्शी और उन को जंगल और दरिया में सवारी दी।(अल इसरा, 36)

ईश्वर ने यह भी कहा लोगों! हम ने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी क़ौम और क़बीलें बनाये, ताकि एक-दूसरे की पहचान करो (और) खुदा के नज़दीक तुम मे ज्यादा इज्ज़त वाला वह है, जो ज्यादा परहेज़गार है। बेशक खुदा सब कुछ जानने वाला (और) सब से ख़बरदार है।(अल हुजुरात, 36)

आठवाः यह है कि वह धर्म किसि ऐसे सीधे पथ की ओर राह दिखाये जिसमे ताने-बाने न हो, वह मानवता के लिए चिकित्सा का कारण हो, और उनके लिए पथ निर्देशक और प्रकाशवान हो। ईश्वर ने जिन्न (भूत-प्रेत) के बारे मे यह ख़बर दी कि जब वे ख़ुरआन सुने तो आपस में एक दूसरे से कहने लगे। कहने लगे कि ऐ क़ौम! हमने एक किताब सुनी है, जो मूसा के बाद नाज़िल हुई है, जो (किताबे) इस से पहले (नाज़िल हुई) हैं, उन की तस्दीक करती है (और) सच्चा (दीन) और सीधा रास्ता बताती है।(अल अहखाफ, 30)

ईश्वर ने कहा और हम क़ुरआन (के ज़रिए) से वह चीज़ नाज़िल करते हैं, जो मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है और ज़ालिमों के हक़ में तो इस से नुक्सान ही बढ़ता है। (अल इसरा, 82)

ख़ुरआन एक आकाश और पथ निर्देशक है, जो मानवता को अज्ञान और त्रटि के अंधकारी से निकाल कर जीवन और भविष्य जीवन में प्रसन्नता और आज्ञाकारिता के प्रकाशवान की ओर ले जाता है। ईश्वर ने कहा ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे (आख़िरी) पैग़म्बर आ गये है कि जो कुछ तुम (खुदा की) किताब में छिपाते थे, वह इस में से बहुत कुछ तुम्हें खोल-खोल कर बता देते हैं और तुम्हारे बहुत-से क़ुसूर माफ़ कर देते हैं। बेशक तुम्हारे पास

अदभुत विरासत

इसलाम धर्म ने जो सबसे महत्वपूर्ण चीज इस सभ्य समाज को दी है, वह इसलाम के धार्मिक नियम है जिसका नाम शरियत है। वास्तविकता से इसलामी शरियत अपने-आपमे एक अनमोल चीज़ है और वह ऐसे ईश्वरीय आदेशों का विवरण है, जो मुसलमान के जीवन के हर पहलू को सवारता है। यह शरियत धार्मिक प्रार्थनायें, और धार्मिक संस्कार से संबंधित आदेश पर निहित है। इसी प्रकार राजनैतिक और न्याय संबंधित आदेशों को शामिल हैं।

जोसेफ शाखत

जर्मनी प्राच्य विद्या विशारद

https://www.path-2-happiness.com/hi

खुदा की तरफ़ से नूर और रोशन किताब आ चुकी है।(अल माइदा, 36)

ईश्वर ने कहा दीने इस्लाम में ज़बरदस्ती नहीं है। हिदायत (साफ़ तौर पर ज़ाहिर और) गुमराही से अलग हो चुकी है, तो जो शख्स बातों से एतक़ाद न रखे और खुदा पर ईमान लाये. उस ने ऐसी मज़बूत रस्सी हाथ में पकड़ ली है जो कभी टूटने वाली नहीं और खुदा (सबकुछ) सुनता और (सब कुछ) जानता है। जो लोग ईमान लाये हैं, उनका दोस्त खुदा है कि उन को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले जाता है और जो काफ़िर है उन के दोस्त शैतान हैं कि उन को रोशनी से निकाल कर अंधेरे में ले जाते हैं। यही लोग दोज़खी हैं कि उस में हमेशा रहेंगे।(अल-बक़रा, 36)

https://www.path-2-happiness.com/hi

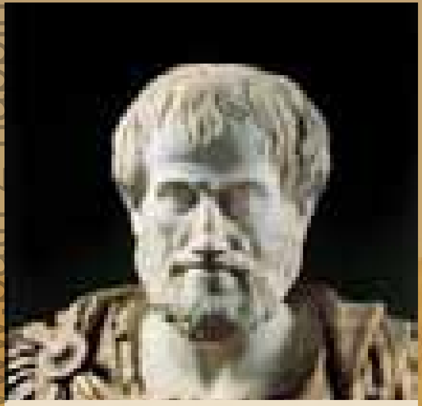

असमानता

असमानता के ना होने का सबसे तुच्छ सुबूत असमानित चीज़ों में समानता के लिए प्रयास करना

अरस्तू
यूनानी दार्शनिक

अल्लाह से सहायता अनुरोध करो

इस बात का संदेह है कि मानसिक बीमारियों से पीढ़ित हो रहे हज़ारों लोगों को सुरक्षित रखा जा सकता है जब कि वह लोग अल्लाह कि कृपा से सहायता प्राप्त करें। बजाय इसके कि वह लोग बगैर किसी समर्थन और बैगैर किसी सहायकार के जीवन की लडाई लडें।

डेल कार्नेजी
अमेरिकन लेखक

हमें किस धर्म की आवश्यकता है?

वह कौन-सा धर्म है जिस पर उपर युक्त लिखे हुए सच्चे धर्म के मानक लागू होते है?

सारे धर्मे को संदर्भ के अनुसार दो भागों मे विभजन करना संभव हैः मानवीय धर्म जो आकाशीय न हो, जिसकी उन्नति मानव व्दारा हो, और वह ईश्वर की ओर से स्थापित न किया गया हो, जैसे बौध्द धर्म, हिंदू धर्म, पारसी धर्म और निर्गुण धर्म। ये सब धर्म सच्चे धर्म होने से बहुत दूर हैं, क्योंकि ये मानव के हवस के अनुसार स्थापित होते हैं। भला तुम ने उस शख्स को देखा, जिस ने अपनी ख्वाहिश को माबूद बना रखा है और बावजूद जानने-बूझने के (गुमराह हो रहा है तो) खुदा ने (भी) उस को गुमराह कर दिया और उस के कानों और दिल पर मुहर लगा दी और उस की आंखों पर पर्दा डाल दिया। अब खुदा के सिवा उस को कौन राह पर ला सकता है, तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते? (अल जासिया, 23)

वह देवत्व धर्म नही है, बल्कि मानवीय हवस का धर्म है, इसी कारण आप इस जैसे धर्मा में मिथक, झगड़े, विरोधा बासी और जातिवाद पायेंगे। ईश्वर ने कहा अगर यह खुदा के सिवा किसी और का (कलाम) होता, तो उसमें (बहुत-सा) इख्तिलाफ पाते। (अल निसा, 82)

वह आकाशीय धर्म जो ईश्वर की ओर से हो, जैसे यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म। इन धर्मा को मानने वालों के लिए ईश्वर ने एक विशेष धर्म स्थापित किया और वही धर्म उनके लिए पसंद किया।

लेकिन अल्लाह एक है।

संपूर्ण जगत में पाये जानेवाले कुल धर्मो के भगवानों की गिनती करते-करते अनुसंधानकर्ता थक गये। प्राचीन इजिफशन्स के भगवानं की संख्या 800 से अधिक थी और हिन्दुओं के पास 10 हज़ार से अधिक है। इसी प्रकार का शिर्क इस जगत में पाये जाने वाले और लोग जैसे यूनानी, और बौद्ध धर्मो में है।

https://www.path-2-happiness.com/hi

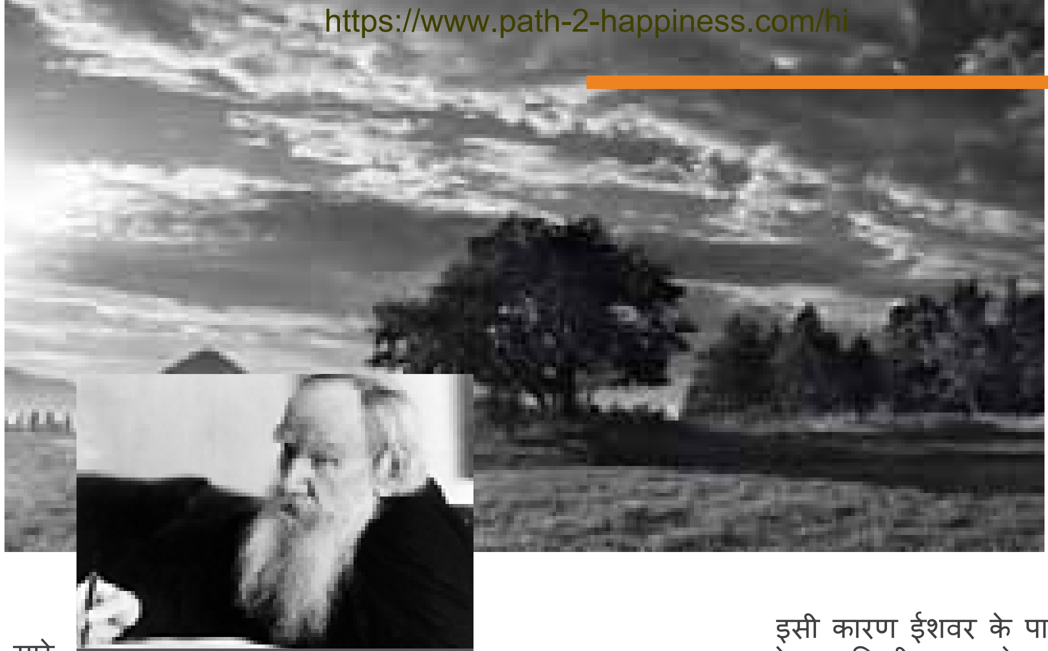

ईश्वर ने कहा उस ने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता मुक़र्रर किया, जिस (के अपनाने) का नूह को हुक्म दिया था और जिस की (ऐ मुहम्मद!) हम ने तुम्हारी तरफ़ वहय बेजी है और जिस का इब्राहीम और मूसा और ईसा को हुक्म दिया था, (वह यह) कि दीन को क़ायम रखना और उस में फूट न डालना। जिस चीज़ की तरफ़ तुम मुश्रिकों को बुलाते हो, वह उन को मुश्किल गुज़रती है। अल्लाह जिसको चाहता है, अपनी बारगाह का चुना हुआ कर लेता है और जो उस की तरफ़ रुजूअ करे, उसे अपनी तरफ़ रास्ता दिखा देता है।(अल शूरा, 13)

इस बात में कोई संदेह नही है कि सारे संसारिक धर्म कुछ विचारों और कुछ लोगों के बडे संगठन का नाम है जो इन धर्मे के स्थापित करनेवालों की हवस के अनुसार विवरण करते हैं, फिर थोडे समय बाद लोग यह जान लेते है कि यह धर्म सही नही है, और फिर उसके विकास का प्रयत्न करने लगते हैं, गुमराही और भ्रम में सदा रहते हैं। ये संसारिक धर्म अपने अन्दर कुछ विशेषता रखते हैं, जिनमें से कुछ निम्न लिखे जा रहे हैं।

सच्ची शरियत

मुझे यह समझ में आगया.... मैं यह अनुभुती प्राप्त किया... मानवता को आसमानी शरियत की ज़रुरत है जो सच को प्रस्तुत करे और गलत को मिटादे।

टोल्स ट्रिव

रूसी साहित्यिकार

ईश्वर के भागीदार होने का संदर्भः

हर दिन यह लोग अपने लिए एक नया ईश्वर बना लेते हैं, परन्तु उनके ये ईश्वर उनकी अपनी कारीगरी है, यह लोग एक ईश्वर के सिवा कई और ईश्वर के वजूद की असंभवता, और कई ईश्वर होने की स्थिति में उनके बीच झगड़ा होने के बारे में यह लोग सोच-विचार नहीं करते हैं। ईश्वर ने कहा खुदा ने न तो किसी को (अपना) बेटा बनाया है और न उसके साथ कोई और माबूद है, ऐसा होता तो हर माबूद अपनी-अपनी मख्लूक़ात को लेकर चल देता और एक दूसरे पर ग़ालिब आ जाता। ये लोग जो कुछ (खुदा के बारे में) बयान करतें हैं, खुदा उस से पाक है। वह पोशीदा और ज़ाहिर को जानता है और (मुश्रिक) जो उस के साथ शरीक करते हैं, (उस की शान) उस से बुलंद है।(अल मुमिनून, 36)

जातिवादः मानवीय संसारिक धर्म जातिवाद और दूसरों को अछूत (नीच) समझने पर आधारित होते हैं, इसलिए कि इन धर्मो को स्थापित करने वाले अपने लिए, अपनी ज़ात के लिए और अपने भक्तों में से जिन को चाहे उनके लिए कुछ

ऐसी विशेषता रख लेते है जो दूसरों के लिए नहीं होती है, ताकि उनका लक्ष्य पूरा हो और दूसरों को अपना ग़ुलाम बना लें। ईश्वर ने कहा लोगों! हम ने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी क़ौमें और क़बीले बनाये, ताकि एक दूसरे की पहचान करो (और खुदा के नज़दीक तुम में ज्यादा इज्ज़त वाला वह है, जो ज़्यादा परहेज़गार है। बेशक खुदा सब कुछ जानने वाला (और) सब से खबरदार है।(अल हुजुरात, 13)

ईश्वर ने किसी भी मानव को नीच निगाहों से देखने या उसका उपहास करने से मना किया है। कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक न उडाये। मुम्किन है कि वे लोग उन से बेहतर हों।(अल हुजुरात, 11)

इसी कारण ईशवर के पास किसी गोरे को काले पर, किसी जात को दूसरे जात पर और किसी जन जाति को दूसरी जन जाति पर महत्व नही है। जब कि यह सारे मानवीय धर्म अंधी जातिवाद पर आधारित हैं।

वृत्ति का उल्लंघनः इस प्रकार से कि यह सारे मानवीय धर्म वृत्ति का उल्लंघन करते हैं, मानव कि क्षमता से अधिक उस पर बोझ लादते हैं। श्रेष्ठ बुध्दि और मानवता के उल्लंघन पर आधारित होते हैं, परन्तु इन धर्मों के भक्त पथ से बहुत दूर हैं और इन्होंने अपने धर्मों में बहुत सा परिवर्तन किया है। ईश्वर ने कहा तो तुम एक तरफ़ के हो कर दीन (खुदा के रास्ते) पर सीधा मुँह किए चले जाओ (और) खुदा की फ़ितरत को, जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है, (अख्तियार किए रहो) खुदा की बनायी हुई (फितरत) में तब्दीली नही हो सकती। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।(अल रूम, 30)

मिथकः ऐसा विश्वास या विचार हैं जो किसी वैज्ञानिक, तार्किक या मानसिक सबूत के बिना केवल कल्पनाओं पर आधारित हो। सारे मानवीय धर्मों में केवल मिथक ही हैं, जिसका कोई सबूत नहीं है। और मिथक पर

गलत स्तरीकृत

हिन्दू धर्म का स्तर का विभाजन कुछ इस प्रकार वितरित है... सफेद जातिः यह वह जात है जिससे पुरोहित और विद्यावान संबंधित होते है। लाल जातिः जो धानवान और शूरवीरें से संबंधित होते हैं। पीली जातिः जिसमें किसान और व्यापारी होते हैं। काला जातिः जिसमें उद्योगी और कारीगर होते है। जहाँ तक पाँचवे स्तर का सवाल है या वह स्तर जो अशुध्द स्तर के नाम से जाना जाता है। इस स्तर से कम चरित्र के लोग संबंधित होते है। उच्च जाति के लग निम्न जाति के लोगों का बहिष्करण करते हैं।

https://www.path-2-happiness.com/hi

https://www.path-2-happiness.com/hi

केवल मिथक ही का आधार हो सकता है। ईश्वर ने सच कहा **कह दो कि (मुश्रिकों!) अगर तुम सच्चे हो, तो दलील पेश करो।**(अल न्म्ल, 64)

विरोधा भासीः यह सारे धर्म विरोधा भासी से भरे हुये हैं। हर समूह दूसरे समूह का विरोध करता है, और इसी विरोध पर अपने धर्म की उन्नति करता है। ईश्वर ने सच कहा है। **अगर यह खुदा के सिवा किसी और का (कलाम) होता, तो उसमें (बहुत-सा) इख्तिलाफ़ पाते।**(अल निसा, 82)

जहाँ तक आकाशीय धर्मे का सवाल है, तो वह सब के सब ईश्वर की ओर से अनुग्रह है, जिसके व्दारा ईश्वर ने मानवता पर परोपकार किया है, ताकि मानवता को सीधे पथ की ओर निर्देश करे, उसके मार्ग को प्रकाशवान बनाये, उनके विरोध में सबूत इकट्ठा करे और अपने आदेशों को पहुँचाने के लिए रसूल भेजने के व्दारा मानवता को मिथक, वृत्ति और बुध्दि के उल्लंघन और ईश्वर के भागीदार मानने की अंधकार से दूर करे। **(सब) पैग़म्बरों को (खुदा ने) खुशख़बरी सुनानेवाले और डरानेवाले (बना कर भेजा था), ताकि पैगंम्बरों के आने के बाद लोगों को खुदा पर इल्ज़ाम का मौक़ा न रहे और खुदा गालिब हिक्मत वाला है।**(अल निसा, 165)

https://www.path-2-happiness.com/hi

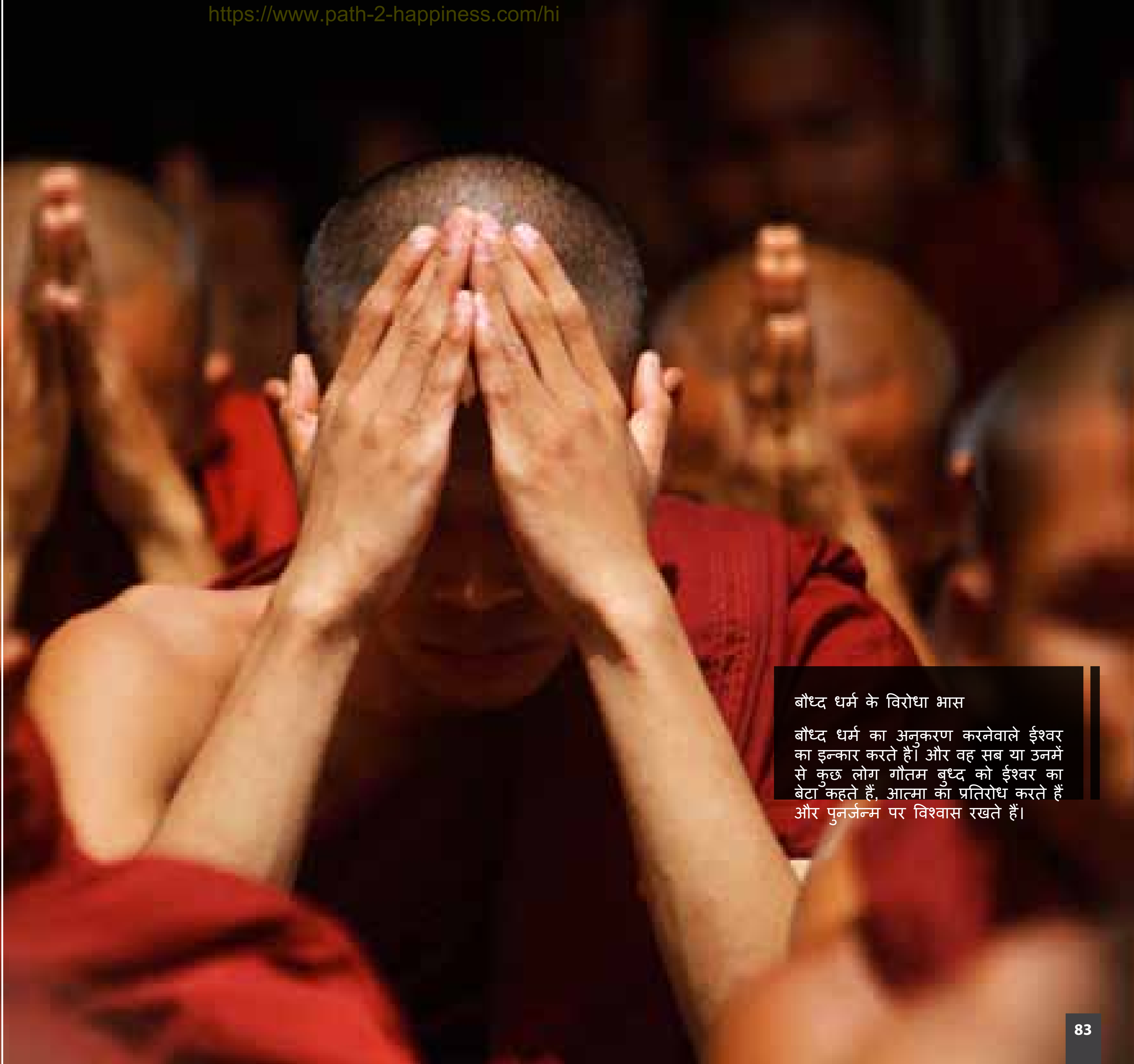

बौध्द धर्म के विरोधा भास

बौध्द धर्म का अनुकरण करनेवाले ईश्वर का इन्कार करते है। और वह सब या उनमें से कुछ लोग गौतम बुध्द को ईश्वर का बेटा कहते हैं, आत्मा का प्रतिरोध करते हैं और पुनर्जन्म पर विश्वास रखते हैं।